

Reg. No. B. 431

श्रीमद्विजयानन्दसूरि सद्गुरुभ्यो नमः

श्री

आत्मानंद प्रकाश.

(६२ भासनी पूर्णिमाएँ प्रकट थतुं भासिकपत्र.)

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

कारुण्यान्न सुधारसोऽस्ति हृदयद्रोहान्न हालाहलं ।
 वृत्तादस्ति न कल्पपादप इह क्रोधान्न दावानलः ॥
 संतोषादपरोऽस्ति न ग्रियसुहृत्तोभान्न चान्यो रिपु ।
 युक्तायुक्तमिदं मया निगदितं यद्रोचते तत्त्वज ॥

पु. २६ रु. वीर सं. २४५५. वैशाख. आत्म सं. ३३. अंक १० भे.

प्रकाशक—श्री जैन आत्मानंद सभा—सावनगर.

विषयानुक्रमणिका.

१ अवस्थाने—अगृति २४१	६ श्री तीर्थेन्द्र चरित्र २५०
२ प्रश्नोत्तर रमश्याएँ २४२	७ विद्यार्थी विभाग—वाचन.	... २५५
३ आचार्य श्री विजयवक्ष्यास्त्रीश्वरज्ञने		८ हैवी धर्माण... २५८
युद्धो प्रति संदेश २४३	९ अरी लेट.	... २६२
४ श्री भद्रानीरतुं सन्यस्त अवन ...	२४४	१० वर्तमान समाचार....	... २६२
५ श्री पार्थनाथ स्तुति...	... २४६	११ स्वीकार समालोचन.	... २६३

भुद्दः—शा. गुडामरांद लक्ष्मीभाई. आनंद भ्रि. प्रेस स्टेशन रोड—सावनगर.

वार्षिक मूल्य रु. १) १५० रु. ४ आवास.

श्री ज्ञानसागर सूर्चित,
श्री विमलनाथ प्रभुनुं चरित्र.

शेठ श्री अमरस्यांह द्वरज्जुवनदासनी सहायतउ तेमनी सीरीज तरीके
आ अंथ छपायेल छे.

अद्वितीय ज्ञवन चरित्रना शिखाइप भोधप्रद आ अंथ छे. आ अंथनी रचना संवत् १४५२ नी सालमां श्री ज्ञानसागरसुरि महाराजे कुरी छे, प्रभु श्री विमलनाथ महाराजना पूर्वलोने सहितनुं संपूर्ण चरित्र, साथे धर्मनो प्रभाव, लेहो, शावकना व्रताना अधिकार, अने लैन धर्मना शिक्षणो सुंदर उपदेश विविध पांत्रीश कथाओ। सहित आपेक्ष छे. आ चरित्रनी रचना अतिभाशाणी, भेनोहर, रसगौरव शैलीथी अलंकृत छे. अंथनी रचना अलौकिक, अने तेमां छुपायेक तात्त्विक भोध असाधारण ढोध ते वाचकना आत्माने शांत रस प्रगटावी, धर्म इपी कृष्णवृक्षनुं स्वरूप समज, तेनो प्रभाव जाण्णी तेनो आदर करतां भोक्ष सन्मुख बध ज्ञय छे. आ अंथमां जे भग्नान प्रभुनुं चरित्र आवेल छे, ते सभयमां देशनी सामाजिक, नैतिक, राजकीय अने धार्मिक प्रवृत्ति केवी हती तेनुं पश्च पठन करनारने भान थाय छे. शहजातमां अठीढीप संबंधी अंथकार महाराजे संक्षिप्त वर्णन आपेक्ष ढोवायी, लेम आ चरित्रवांयन्थी भूतकाणना धतिहास साथे लैन भूगोणनुं पश्च ज्ञानपञ्च थाय छे. एकांडर रीते आ अंथ दरेक भनुप्पने पठन पाठन करवा लेवो ढोध पोताना निवासस्थानमां, भंडारमां पुस्तकालयमां ढोवो जेमझे. रायल आठ पेल पीस्ताणीश हार्म साडा नर्थुरोह पानानो अंथ सारा कामलो उपर सुंदर टाईपथी गुजराती भाषामां छपावी सुंदर कपडाना बाईडीगथी अलंकृत करेल छे. किमत इ. १-१२-० पोस्टेज जुहु. लेट शुद १५ ना रोज अक्टु थरो.

जैन नररत्न भामाशाहनुं चरित्र.

हालना सभयमां धतिहासनो अव्यास, वांचन, कथाओनो आदर लैन सभाजमां कृत्वाक अशे शुद्धिगत थेतो जेवामां आवतो ढोवायी, तेमज देशमां, सभाजमां पश्च देश अने सभाज-सेवानो पवन जेश्वलेर झुँझतो ढोवायी, अभुक अशे अभुक भनुप्पने तेनी सेवा कृत्ता-धृत्ता ढोवायी प्रसंगानुसार तेमनी भारनामां वधारे बग भगे ए आशयथी धतिहासप्रसिद्ध लैन कुलभूमणु भामाशाहनुं चरित्र ऐतिहासिक दृष्टिए तैयार करावी छपायेक छे. आ अंथमां नररत्न भामाशाहनो ज्ञवतंत हेय तथा सभाज प्रेम-सेवा अने श्रीभानु छीरविजयसूरीचरज्जुनी अहेनिश धगधगती ज्ञवतंत सासनदाज ए बंने आदरो भाषेसाथ उला रही गांधर अने धर्मप्रेमना प्रकाशो पाडी रवा छे जे वांचतां ते महापुरूषनी प्रभावापश्च श्रवनमां वर्णी लेवाने रहेने लक्ष्याध्ये छाये.

शुभारे छवीश हार्म नर्थुरों पानानो सचिन उंच्या कागज उपर सुंदर टाईपमां छपानी सुशोभित बाईडीगथी अलंकृत करेल छे. किमत ऐ इपीया, पोस्टेज जुहु.

श्री

आर्मानन्द प्रकाश.

॥ वंदे शीरम् ॥

तेषां पारमेश्वरमतवर्तिनां जन्तुनां नास्त्येव शोको न
विद्यते दैन्यं प्रलीनमौत्सुक्यं व्यपगतो रतिविकारः जुगुप्स-
नीया जुगुप्सा असम्भवी चित्तोद्वेगः अतिदूरवर्तिनी तृष्णा
समूलकाषांकषितः सन्त्रासः किन्तहि तेषां मनसि वर्तते धीरता
कृतास्पदा गम्भीरता अतिप्रबलमौदार्यं निरतिशयोऽवष्टुभः।

उपमिति भवप्रपञ्चा कथा.

पुस्तक २६ मुं. } श्रीर संघत् २४६५. वैशाख आठम संघत् ३३. } अंक १० मो.

ज्वलडाने—जगृति.

राग—सोरह—(विमला नव करशो उचाट के...)

ज्वलडा ! जाणुले जनतुं नाम अङ् संसारमारे (२)
लाख चोराशी झेरा झरीये, पुन्ये प्रलु शासन अवतरीये;
झेटो इरिये तरवा छिमत हारमारे. ज्वलडा !
चार उषाघनी चोडी छाडी, ज्वन श्री जगनाथमां जेडी;
लक्ष्मि छाडीमां ऐसी जवातुं विसारमारे. ज्वलडा !
भोवदो नर जन्म आ पाभी, भोजमन्त्रमां भिथ्या जाभी;
रत्नने वाभी, सवनी भ्रमणा वधारमारे. ज्वलडा !
क्षणु क्षणु एक आ जाय अमूली, झेगट झन्दमां चेतन झूली;
ज्वन झूली, जाय पड़यो शुं विचारमारे. ज्वलडा !
देव—शुद्धनो उत्तम भेणो, भेणवी मनसुभ ! जगने झेलो;
हीरो आवेदो हाथे करीने हारमारे. ज्वलडा !
मनसुभलाल डाल्यालाई शाह—वढवाणुकेम्प.

२४२

श्री आरम्भानंद प्रेतार्था.

प्रश्नोत्तर समर्थ्याचो. (भाग ३ अ.)

होष्ट्रा.

वार क्यो छे चंकनो, कवणु हीपावे हेह;	
उत्तर सत्त्वर आपनो, सोम-धर्म शुद्ध तेह.	१
नसीब हेवीनुं नाम शुं, गंखीर डोणु गण्याय;	
लक्ष्मी-सागर लछ पूर्यो, उत्तर एम जग्याय.	२
कयुं वचन सान्त्वन हीचे, रहे डोणु योगी हज्जुर;	
अभय-देव सूरि नामथी, वाष्णे सुभ भरपूर.	३
क्यो दीप आ क्षेत्रमां, सेवड पौष्टक डोणु;	
जंयु-स्वामी जगवंधथी, गण्यो जौने गौण्य.	४
शास्त्र पद लाखयुं कयुं, लरे डोणु हःभानां लाग;	
सिङ्क-सेन समरथ शुर, भूकाळ्या बहु भाग.	५
शोषुगिरि शुं नीपने, कवणु नाम गिरि ठोच;	
रत्न-शेषर शुद्ध शीघ्रथी, शमशे सधणो शोच.	६
हुरे धोडे डोणु हेतथी, शुं धच्छे जग लेक;	
ज्यो नाम हरि-भद्र रुं, धणु सम वीरला केक.	७
कयुं तत्व उत्तम कहुं, कवणु नाम शंभ नाद;	
सकण शुणु संपत शुर, धर्म-वेष अपवाह.	८
अपरनाम कयुं “सत्त्वतुं, महान ज्ञत शुं छेय;	
हीर-विजय शुद्ध हीरला, पूर्ण प्रभाविक सोय.	९
वधे सायर डोणु हर्षने, कवणु शोलावे लाण;	
सोम-तिलड सूरि रायतुं, ध्यान धरो त्रणु काण.	१०
हृध थडी उज्ज्वल कशुं, वरे वीर कध माण;	
जश-विजय शुद्ध प्रणुमतां, जश वाधे सहु काण.	११
कयुं आसन कहुं चोगतुं, शुं धच्छे रणवीर;	
पद्म-विजय ना नामथी, पामो लव जणतीर.	१२
यरे चारो डोणु भातीनो, कई कंबण मूल्यवान;	
हंस-रत्न सूरिधड, तस गाइओ शुणु गान.	१३
तिर्थं कर पंचम क्या, कवणु लंछन ज्ञन पद;	
सुमति-कमण पंडित शुद्ध, हो उत्तर तल शर्म.	१४

शाह छग्नलाल नहानंद नाण्यावी, वेज्वपुर-भज्य.

सेन=भिन्न, भद्र=कल्याण, सुभ.

आचार्य श्री विजयवल्लभसूरीक्षरल्लनो युवको प्रति संदेश।

२४३

आचार्य श्री विजयवल्लभसूरीक्षरल्लनो युवको प्रति संदेश।

प्यारे युवको,

युवक समाजकी नवीन प्रवृत्ति करने के लिये जो अहंग उत्साह और साहस युवकोंने ही आया है उसके लिये मैं युवकोंका धन्यवाद हेता हूँ।

ऐक्यता एक भड़ी भारी चीज है साथही ऐक्य साधनेमें भारी कठनाई-योंका सामना करना पड़ता है, लेकिन युवकोंका सहनशील अनकर ऐक्यता और संगठनसे समाजमें और ज्ञानकर साधुवर्ग और श्रावक वर्गमें जो लिप्तता या विचार लेह ज्ञन पटे उसका सविनय और शांतिपूर्वक सुधार करनाहि पड़ेगा।

याह रहे भूतकाल चाहे जितना उज्ज्वल हो, धर्मके सिद्धांत कितनेही उच्च क्षेत्रों न हो, गगनच्युंणी बब्य महिरों से धर्म ध्वनि इहरा रही हो पर यहि समाज का देह ही क्षय रोगसे अस्त हो और वह हिनप्रतिहिन क्षीष्णु होता जा रहा हो तो उसका छलाज किये विना समाज लुवित नहीं रह सकता, उनेका हुक्मार भी नहिं।

आपका उत्तरदायित्व सभसे अधिक है, कर्तव्यपथ पर आओ, समाजकी सेवामें जुट जानेकी शक्ति प्राप्ति करो, रथनात्मक काम हाथमें लो। समाजमें संगठन करो, छोटे भी भटको पीछे वृथा शक्तिका व्यय न करो, ईर्ष्या और देखकी परवा न करो।

सभ भित्तकर समाज सेवामें जुट जाओ, और जगह जगह गाम गाम व शहर शहर के युवकोंका इस कार्यमें प्रवृत्ति करो।

आखों स्त्रीओं और पुंजोंमें सच्ची शिक्षा बढ़ाने के प्रयत्नोंका जोने, कुरीतिओंका जड़से फैक्ने के लिये कमर कस दो; और निर्बाच छोकर इस समाजकी प्राचुर्धातक प्रथाओंका नष्ट करो। तभी तभी तुम अपने समाजको लुवित रण शडोगे।

युवकों पर आक्षेप है कि वे आखते बहुत हैं करते कुछ नहिं। इस वाक्यको, इस कलांकको, आप युवकों कर्तव्यपरायण अनकर धो। डालो। तन, मन, धनसे समाज उत्थानमें अपना लुवन समर्पण करके भताहो की युवक ही नवयुगका नेता, सुधारक, और सच्चा सेवक है, छ शांति:

वल्लभविजयका धर्मलाभ।

२४६

श्री आत्मानंद प्रकाश.

मुमुक्षु ज्ञोये आत्मकल्याणार्थं अनुकरण करवा योग्य
श्रमण भगवान् श्री महावीरनुं सन्यस्त लिप्त.

[आचारांग सूत्रना अक्षयर्थं श्रुत स्फुटमांथी]

०८-म दिवस चैत्र शुहि १३ दिक्षा दिवस भागशर वहि (युग्मराती) शार्ति क वहि १०

महावीर प्रबुनो विहार (१)

सुधर्मस्त्वाभी (वीर-पटोधर) पेताना शिष्य जंभूने कहे छ.

१ (हे जंभू !) मेरे लेम सांख्युं छे तेम कहुं छुं के श्रमण भगवाने दीक्षा लधने हेमन्त ऋतुमां तरतज विहार कर्यो हुतो। इन्द्रे एक हेव हृष्ट वस्त्र प्रबुना खले मूळयुं हुतुं। परन्तु भगवाने नथी विचार्युं के ए वस्त्रने हुं शीयाणामां वापरीश। भगवान तो लुवित पर्यन्त परीषेहोने सहन करनार हुता, मात्र अधा तीर्थं करेना कह्य (आचार) ने अनुसरी प्रबुओ इन्द्र समर्पित वस्त्रने धारयुं कर्युं हुतुं।

२ दीक्षा देती वर्खते भगवानना शरीरे लागेला सुगंधी चूर्णादिक योगे आरभिना सुधी धण्डा भ्रमरादिक जंतुओ। प्रबुने वणगता अने मांस तथा लेडी चूसता हुता।

३ भगवाने लगलग १३ मास सुधी इन्द्रहत वस्त्रने धारयुं कर्युं हुतुं, पछी ते वस्त्र छांडीने वस्त्र रहित थथा हुता।

४ भगवान सावधान थाई, पुरुष प्रमाणु भागने शर्मासमितिशी भराअर नेई तपाशीने चालता हुता।

५ भगवान ज्यां रहेता त्यां अक्षयर्थमां सुदृढ रहेता अने सदा वैराग्य आवित छतां धर्मिकान ध्याता हुता।

६ भगवान वृहस्थो साथे हुणवुं मणवुं छांडीने ध्यान निमग्न रहेतां सरल स्वभावी प्रबु ए रीते वर्तीता हुता।

७ भगवान वृहस्थो साथे हुणवुं मणवुं छांडीने ध्यान निमग्न रहेतां सरल स्वभावी प्रबु ए रीते वर्तीता हुती।

८ भगवानने कोई वर्णाणुता तो तेमनी साथे पणु कशुं ज्ञाता नहीं अने कोई पुन्य हीन अनार्यो अन्यथा वर्तीता तो तेमना प्रत्ये कोप करता नहीं सदाय स्वसावमांज जीतता। प्रबुनी सहनशीलता अदेखर अहबुत हुती।

શ્રી મહાવીરનું સન્યસ્ત જીવન.

૨૪૫

૧૦ જ્ઞાતપુત્ર ભગવાન સંયમ માર્ગને બહુ દફાણે સેવતા.

૧૧ ભગવાને દીક્ષા લીધા અગાઉ દ્વારા એ વર્ષથી થંડુ (સચિત) જળ-પાન તનખું હતું; એ વર્ષ લગ્ની અચિત જળપાન કરતા. ભગવાન એકત્વ લાવના ભાવતા, ક્ષાય રૂપ અગ્નિને ઉપશમાવી શાન્ત જન્યા થકા તથા સભ્યકૃત્વ ભાવથી ભાવિત રહેતા થકા દીક્ષિત થયા.

૧૨ ભગવાન સજીવ વસ્તુ સ્થાવરનો આરંભ તળુ વિચરતા હતા.

૧૩ કર્મવશ રાગદ્રોષ સહિત સહુ જીવો જ્યોતિ જ્યોતિ સર્વ યોનિઓમાં ઉપજતા રહે છે એમ ભગવાન વિચારતા.

૧૪ મોહવશ અજ્ઞાની જીવ કર્મથી બંધાય છે એમ જાહી ભગવાન સંયમ માર્ગમાં બહુ સાવધાન થઈ રહેતા હતા.

૧૫ જાનવંત ભગવાને અત્યુત્તમ સંયમ માર્ગ પ્રકાશયો છે.

૧૬ ભગવાને પવિત્ર અહિંસાને અનુસરી, પોતાને તેમજ પરને પાપમાં પડતા અટકાવ્યા. પ્રભુ ઘરેખર પરમાર્થ દર્શી હતા.

૧૭ ભગવાન દૂષિત આઢાર તળુ, શુદ્ધ આઢાર કરતા હતા.

૧૮ તેવો શુદ્ધ-નિર્દેખ આઢાર અદીનપણે પોતે યાચી લેતા હતા.

૧૯ પ્રભુ નિયમિત ખાનપાન વાપરતા, રસમાં આસક્ત ન થતા. રસ માટે ઈચ્છા-સંકદ્ય પણ નહીં કરતા અને હેઠની દરકાર-મમતા નહીં કરતા, અરજ મટાડવા સારુ શરીરને અણુતા પણ નહીં.

૨૦ માર્ગમાં ચાલતાં આડું અવળું જેતા નહીં; વાતો કરતા નહીં, પણ માર્ગ જેતા થકા જયણા સહિત પ્રભુ ચાલ્યા જતા હતા.

૨૧ બીજે વર્ષે પ્રભુ, ધન્દ્રદત્ત વખ છંડીને છુટ આહુથી વિચર્યા હતા.

વિહાર દરમીયાન નિર્ષ્પૃહી મહાવીર અલુનાં નિવાસ સ્થાન (૨)

૧ કોઈ વખતે ભગવાન, નિર્જન ઝુંપડા-ઝુંપડીઓમાં, પાણી પીવા માટે કરેલી પરણોમાં, કે હાટોમાં રહેતા, તો કોઈ વખતે લુહાર વિગેરેની કોડામાં અથવા ધાસની ગંભુરોની નીચે, ધ્યાન સમાધિસ્થ રહેતા.

૨ કોઈ વખતે પરામાં બાગમાંના ધરેલમાં કે શહેરમાં રહેતા; તો કોઈ વખતે મશાણું સુનાં ધર કે આડની નીચે કાઉસરગ ધ્યાન રહેતા.

૩ એ રીતે એવા સ્થળોમાં રહેતાં થકાં તે શ્રમણ ભગવાન પ્રમાદ રહિત સમાધિમાં લીન થઈ બરોખર તેરમા વર્ષ પર્યાન્ત પવિત્ર ધ્યાન ધ્યાતા રહ્યા.

२४६

श्री आत्मानंद प्रकाशा.

४ दीक्षा लीधा पछी जगवान क्यांच पणु वधु निद्रा नहीं लेता. हमेशां पोताने जगवाता रहेता. क्यांक लगारेक सूता तो पणु त्यां निद्रानी पुऱ्या करता नहीं.

५ तेच्यो निद्राने कर्म बांधनारी ज्ञानी जगृत रहेता. कहाच निद्रा आवामांडती तो तेने उपायथी फूर करता.

६ उपरैक्त स्थणोमां रहेता जगवानने भयंकर अनेक प्रकारना उपसर्गी थया हुता.

७ ज्ञान पुढेचा शून्य घरमां कुकर्म करवा जता जगवानने त्यां ध्यानस्थ हेणी उपसर्ग करता वणी विषय वांछनाथी पणु दोडो प्रभुने सतापता.

८ ए रीते जगवाने मनुष्यो तथा तिर्यंचा तरङ्गी अनेक प्रकारना अनुकूणने प्रतिकूण भयंकर उपसर्गी हमेशां सावधानपण्ये वर्तता थका सहन कर्या.

९ वणी जगवान हर्ष-शोङ्क टाणीने मैनपण्ये विचरता रहेता.

१० निर्जन स्थणमां जगवानने उलेला जेड दोडो पूछता अथवा रात्रि वधते ज्ञान पुढेचा प्रभुने पूछता के अरे तुं कोणु उलो छे ? त्यारे जगवान कशुं ओळता नहीं. तेथी तेच्यो शुस्से थध जगवानने भारवानुं पणु करता, परंतु जगवान तो निस्युह थका समाधिमां तद्वीन रहेता.

११ अरे अहीं तुं कोणु उलो छे ? एम दोडोचे पूछतां कोई वधते जगवान ओळता के ‘हुं बिक्षुक उलो छुं’ ते सांलणी जे तेच्यो ओळता के ‘अहींथी जद्ही जतो रहे’ तो जगवान अन्यत्र जता, कारणु के ए उतम आचार छे अने जे तेच्यो जवानुं कशुं नहीं कडेतां कषायवंत बनता तो जगवान मैन रही त्यांज ध्यान करतां.

१२ ज्यारे शिशिर ऋतुमां ठंडो पवन जेसधी कुंडातो हुतो, ज्यारे दोडो थरथर पूऱ्यता हुता, ज्यारे अपर साधुओ तेवी ठंडीमां वगर पवननी जगा शोधता हुता तथा वस्त्रो पडेवा चाहता हुता, ज्यारे तापसो लाकडां बाणी शीतनुं निवारणु करता हुता, एम ज्यारे शीत सहवी आरे कठीन हती लारे संयमी जगवान निरीहपण्ये खुल्ला स्थानमां शीत सहन करता थका समवावे रहेता तेम थीज सुमुक्षु जनेअे वर्तवा अप करवे.

निराणी प्रभुचे डेवा डेवा परीषङ्का सदा. (३)

१ जगवान सदा संयममां सावधान बनी, कर्कश, स्पर्श, ताळ, ताप तथा दांस अने भवधरना डंभ विग्रहे भयंकर परीषङ्का सहन करता हुता.

શ્રી મહાવીરજી સન્યસ્ત જીવન.

૨૪૭

૨ લગ્નવાન હુર્ગમ્બિં એવા લાટ દેશના વજાભૂમિ તથા શુભ્રભૂમિ નામના અન્ને લાગોમાં જઈ વિચર્યા હતા, ત્યાં તેમને રહેવાને ધણી હલકી જગો મળતી તેમજ પીઠ ઇલકાદિક આસન પણ ધણી હલકા મળતા.

૩ લાટ દેશમાં તે લગ્નવાનને ધણી સારે ઉપસર્ગો થયા, ત્યાંના અજ્ઞાન લોકો પ્રભુને સંતાપતા, લોકન પણ દ્વારા મળતું તથા કૃતરાચ્છો આવી પ્રભુ ઉપર પડતા ને કરડતા.

૪ એવે વખતે બહુ થોડા જ લોકો તે કૃતરાચ્છોને કરડતાં નિવારતા. ધણી લોકો તો ઉલટા લગ્નવાનને મારતા થકા કૃતરાચ્છોને છુછુ કરી તેમના તરફ કરડવા મોકલાવતા.

૫ આવા લોકોમાં લગ્નવાન ધણી વખત વિચર્યા, ત્યાંની વજાભૂમિના ધણી-ભરા લોકો દ્વારા ખાતા તેથી તેઓ વધારે ડોધીકા હોવાથી સાધુને દેખી કૃતરાચ્છો વડે તેમને એટલો ગંધો ઉપદ્રવ કરતા કે ત્યાં (બૌધ્ધધર્મી) બિસ્કુડો ત્યાંના લોમિયા છતાં એક મોટી લાઠી વિ. હાથમાં પકડીને ફરતા. તેમ છતાં પણ કૃતરા તેમની પુંડ પકડતા તથા તેમને કરડી આતા. એ રીતે લાટ દેશ વિહાર કરવાને ધણી વિકટ છતાં વીરપ્રભુએ શરીરની ભમતા તજી, કર્મ નિર્જરાઅથે નીચજનોનાં કડવાં વચ્ચેનો સહન કર્યો હતાં.

૬ એ રીતે જેમ અગ્નવાન હાથી સંથામના મોખરે પહોંચી જય મોળવી પરાક્રમ બતાવે તેમ વીર પ્રભુ તે વિકટ ઉપસર્ગોના પારગામી થયા.

૭ કોઈ સ્થળે પ્રભુ ગામના પાદરે જતા કે ત્યાંના અનાર્ય લોકો સામા આવી તેમને મારતા અને બોલતા કે ‘ અહીંથી હૂર જતો રહે.’

૮ ધણી વખતે લાટ દેશમાં લોકો લાડકીથી, મૂઢથી, આલાની અણીથી, પત્થરથી કે હાડકાના ખાપરથી પ્રભુને મારી મારીને પોકારો પાડતા હતા.

૯ કોઈ વખતે લગ્નવાનને પકડી અનેક ઉપસર્ગો કરી માંસ કાપી લેતા, અથવા તેમની ઉપર ધૂળ વરસાવતા, અથવા તેમને ઉચા કરીને નીચે પાડતા અથવા આસનથી નીચે પાડતા. પરન્તુ નિસ્પૃષ્ટી લગ્નવાન દેહ ભમતા તજી તે સધજું સહન કરતા હતા.

૧૦ જેમ શૈર્યવંત પુરુષ સંથામના મોખરે રહ્યો થકો કોઈથી પાછો હુઠે નહીં તેમ પ્રથળ સત્વવંત પ્રભુ એ ઉપસર્ગોથી પાછા નહીં હુઠતા તે સધગા ઉપસર્ગોને સહન કરતા થકા વિચરતા હતા.

આવી રીતે નિસ્પૃષ્ટી પ્રભુએ સંથમતું પાલન કર્યું છે તેવી રીતે અન્ય સુમુક્ષુઓએ પણ વર્ત્વાં.

२४८

श्री अर्थमानंद प्रकाश.

वीरप्रबलुनी तपश्चर्या. (४)

१ शरीरे निरोगी छतां लगवान् भिताहारी रहेता हुता अने कहाच डोँध आगंतुक रोग उपजता तो प्रबल तेने प्रतिकार (ध्वलाज) करवा नहीं चाहता.

२ वर्णी शरीरने अशुचिमय जागीरे तेच्चा जुलाण, वमन, तैल मर्दन, स्नान, चंपी ने हातणु पथु नहीं करता.

३ धन्दियोना विषयोथी विरक्ता थर्झ लगवान् अद्वपक्षार्थी थया थका (मौन पथु) विचरता हुता.

४ लगवान् शीयाणामां छांयडामां ऐसीने ध्यान करता अने उनाणामां उत्कुटक आसने तडकामां ऐसी ताप सहन करता.

५ शरीर निर्वाहार्थे लगवान् दुखा लात, मंथु अने अहंनो आहार करता; आठ महिना सुधी ए ग्रषु चीजे वापरी लगवाने यत्वान्यु छतु.

६ वर्णी पंहर पंहर दिवस सुधी, महिना महिना सुधी, ए ए महिना, ने ७ ८ महिना सुधी दिनरात अन्तपाणी वगर उपेषितपथु, निरीह थर्झ, लगवान् विचरता हुता.

७ अने अन्न पथु ठरी गचेल त्रीने त्रीने, चाये चाये, के पांचमे पांचमे दिवसे वापरता.

८ तत्त्वज्ञ लगवान् पोते पाप नहीं करता भीजा पासे पाप नहीं करावता अने पाप करनारने दुःख नहीं मानता.

९ लगवान् शहेर के गाममां जर्ध भीजने माटे करेलो निर्देष आहार याची लधने, समसावे ते आहार वापरता.

१० लिक्षा लेवा जतां, लगवान्ने रस्तामां भूम्या कागडा विगेरे पंभीओ जमीन उपर रहीने पोतानो आहार लेता ने नजरे पडता तो लगवान् तेमने कशी ग्रषु अडचणु नहीं पाडता थका यतनाथी याव्या जता हुता.

११ तथा त्यां डोँध खाक्षणु, श्रमणु, लिखारी, विदेशी चांडाल, मार्जीर कूतराने कंध मणतुं हेघी, तेमने विधन नहीं पाडता थका तथा मनमां कशी अप्रीति नहीं धरता थका धीमे धीमे याव्या जता हुता.

१२ वर्णी आहार पथु द्विनग्ध के शुष्क के ठरी गचेला रांधेला अहंनो के जूना धान्यनो के जूव विगेरे नीरस धान्यनो जेवो मणी आवतो तेवो शान्तसावे वापरता. अगर नहीं मणतो तो पथु शान्तसावे रहेता.

શ્રી પાર્વીનાથસ્તુતિ.

૧૪૬

૧૩ વળી તે ભગવાન ઉત્કૃટક, ગોદોહિકા, વીરાસન વિગેરે આસનોથી, નિર્વિકારપણે ધર્મધ્યાન કરતા રહેતા ને નિરીહ બની અંતઃકરણની પવિત્રતા જગવતા થકા ઉર્ધ્વ, અધ્યો અને તિર્યંગલોકના સ્વરૂપનો તે ધ્યાનમાં વિચાર કરતા.

૧૪ એ રીતે કૃષાય રહિત થઈ, આસક્તિ તણુ, શાખાહિક વિષયોમાં નહીં દોલાતા થકા ભગવાન સદ્ગા ધ્યાનનિમણ રહેતા અને એ રીતે છજસ્થ અપસ્થામાં પણ ભગવાન પ્રણાળ પરાક્રમ દાખલી કોઈ વખતે પણ પ્રમાર્દી નહીં બનતા.

૧૫ પોતાની મેળે જ સંસારની અસારતા જાહીને આત્માની પવિત્રતાથી મન વચન અને કાયાને પોતાના કખને રાખી, શાન્ત અને સરલ સ્વભાવી ભગવાન પવિત્ર પ્રવૃત્તિવંત રહ્યા. એવી મર્યાદા મતિમાન નિરીહ ભગવાનને વારંવાર પાણેલી છે. એ રીતે ખીંડ સુસુક્ષુમ્માંએ પણ વર્તાં એમ હું કહું છું:

તા. ક. આ અધ્યયનમાં વર્ણવેદી વીરપ્રભુના અદ્ભુત વૈરાગ્ય, અદ્ભુત સહનશીલતા અને અદ્ભુત ધૈર્ય વાંચવાથી સુધી વાંચનારના છદ્યમાં પ્રભુ ઉપર અદ્ભુત અક્રિતિઓને પેશ થશે. ઘતિશમ.

૬૦ સહૃદ્યુણાતુરાજી મુનિ કર્મરવિજ્યણ મહારાજ.

શ્રી પાર્વીનાથ સ્તુતિ.

(મોદલનાર—મણીલાલ ખુશાલયંદ પરીખ પાલણુપુર)

ત્રિલુલન વંદન જગદાનંદન, ચિદ્ધબન સર્જી તું દાતાર;

શુદ્ધ બુદ્ધ તું કર્મ નિકંદન, ધર્મ ધુરધર તું કિરતાર.

સત્યવચન સુખમાંથી જીચરવું, ધ્યાન પ્રભુનું નિરંતર ધરવું;

ધર્મ કર્મમાં અહોનિશ રમવું, પાપ કરતાં દિવથી તો ડરવું;

સૃષ્ટિ સકળાના નરવર નાયક, પારસ્માણી તું છે જીનરાજ—ત્રિ૦-૧

વિકટ વાટ ભવરણમાં વિચરવું, હુઃખ દાવાનણથી નહીં ડરવું;

સંકટ સમયે ધીરારે બનવું, શરણ એક શ્રી જીનતું કરવું;

હુઃખ નિવારક જગજન સજજન, નટપર નંદન સ્થામકુમાર—ત્રિ૦-૨

તારક નર નાયક તું સ્વામી, સત્ય સહાયક આત્મરામી;

આશરો એક અંતરણમી, રિપુજ્ઞનો રહેશે જ્ઞમારી;

અભિલ જગતના હુઃખીયા સમયમાં, સહાય થજે શ્રીપાર્વીકુમાર-ત્રિ૦૩

શ્રી સ્વાત્માનંદ પ્રકાશ।

૧૨૨ લાં શરીર ()

गुरुत्वा त्रिकाये लिखन कर्मित्वान्वयन

(ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ)

અનુક્રમનાંથી કેરણ નામ.	પ્રતી.	માતા.	પૂર્વભવ નામો.	પૂર્વભવ રાતોનાં.	પૂર્વભવ ગાત.	શરીરનાંથી હૃતાદ્ય.	ઉચ્ચાધિકાર.
૧ જાધબહેન	નાલિ	નિતશેન	મર્દેની	વદ્જનાલ	ચૌદ પૂર્વખૂરી	શરીરનાંથી હૃતાદ્ય.	ગુરુરચાસુ.
૨ અલુતનાથ			વિષયા	વિષયા	ઓકાદશશરી પાંડક		૮૩ દાખ પૂર્વ
૩ સંભવનાથ	જીતારી	સંખર	સેના	વિશેષભાળન	અંગરાતી		૧૧ દાખ પૂર્વ
૪ આલિનાંદનરચામી			સિદ્ધારી	ધર્મસિદ્ધ	"	માંગળાક	
૫ સુમત્રિનાથ	મેલ			સુમાંગલી	"		૩૦૦
૬ પદ્મપ્રભુ	ખર			સુર્યામી	"		૨૫૦
૭ સુપાંદ્રનાથ	પ્રતાજ			પૃથ્વી	સુંદરાયથ		૨૦૦
૮ ચંદ્રપ્રભુ			ભહસેન	લદ્જામ્બા	દિવ્યાખાલુ		૧૫૦
૯ સુવિષ્ણનાથ			સુમીદ	રામા	ચુગુઅલુ		૧૦૦
૧૦ શી તકણનાથ			દદ્રિદ્રા	નાદા	લાઘુઆઙુ (લાઘુઆઙુ)		૫૦
૧૧ શ્રીયાસનાથ			વિષણુ		દિલા		૮૦
૧૨ વાસ્કુળાખ			વસ્કુળા	જ્યા	દાંડિકાઠ		૭૦
૧૩ નિરમલનાથ			કૃત્યારી		સુંદર		૬૦
૧૪ અનંતનાથ			કિંદ્સેન		માહેંદ		૫૦
૧૫ ધર્મનાથ					સુવા		૩૫
					સેવતા		૧

શ્રી તીર્થકર ચસ્ત્ર.

249

નામ	જિલ્લા	અધિકારી	સેક્રેડરી	નામ	જિલ્લા	અધિકારી	સેક્રેડરી	નામ	જિલ્લા	અધિકારી	સેક્રેડરી	નામ	જિલ્લા	અધિકારી	સેક્રેડરી
૧૬ આત્મનાથ	અંગુલ	અધિકારી	અધિકારી	૧૭ કૃષ્ણનાથ	અંગુલ	અધિકારી	અધિકારી	૧૮ અરોપનાથ	અંગુલ	અધિકારી	અધિકારી	૧૯ અરોપનાથ	અંગુલ	અધિકારી	અધિકારી
૨૦ અધીક્ષિતનાથ	અંગુલ	અધીક્ષિત	અધીક્ષિત	૨૧ નાથનાથ	અંગુલ	અધીકારી	અધીકારી	૨૨ પ્રદીપનાથ	અંગુલ	પ્રદીપ	અધીકારી	૨૩ પાદુકનાથ	અંગુલ	પાદુક	અધીકારી
૨૪ મહાવિર રઘુનાથ	અંગુલ	મહાવિર	મહાવિર	૨૫ નાથ	અંગુલ	નાથ	નાથ	૨૬ સિંહાગરી	અંગુલ	સિંહાગરી	અધિકારી	૨૭ શાખે	અંગુલ	શાખે	અધિકારી
૨૮ નાથ	અંગુલ	નાથ	નાથ	૨૯ અધિકારી	અંગુલ	અધિકારી	અધિકારી	૩૦ નાથ	અંગુલ	નાથ	અધિકારી	૩૧ શાખે	અંગુલ	શાખે	અધિકારી
૩૨ નાથ	અંગુલ	નાથ	નાથ	૩૩ નાથ	અંગુલ	નાથ	અધિકારી	૩૪ નાથ	અંગુલ	નાથ	અધિકારી	૩૫ નાથ	અંગુલ	નાથ	અધિકારી

२५९

गी आरम्भ के प्रकार।

શ્રી લીધોંકર અરિત્ર.

२४३

(二)

શિક્ષણના વહેમો (સંગ્રહીત)

૨૫૫

વિદ્યાર્�ી વિભાગ વાચન.

શિક્ષણના વહેમો (સંગ્રહીત.)

પાઠવનાર—સાધુષુનુરાજી કર્મવિજયાજ—(સિક્ષણત્ર).

૧ આપણે સામાન્ય ખ્યાલ એવો છે કે આજે જે વિદ્યાર્થીઓનો સમૃદ્ધાય શિક્ષણ—કેળવણી લઈ રહ્યો છે તે કેવળ માત્ર પિતાહિકના હ્યાણને લીધેજ અથવા શિક્ષકની ધાકના પરિણામેજ છે એ આપણી માન્યતા ભૂલ ભરેલી છે.

૨ આ વાત સાચી છે કે આજે આપણે વિદ્યાર્થીઓને જે શિખવી રહ્યા છીએ તે બધું મોટે ભાગ વિદ્યાર્થી હ્યાણ તથા લય કે લાલચને વશ થઈનેજ શિખે છે. આતું કારણ એ નથી કે વિદ્યાર્થી શિખવાને નથીજ ધર્છાતો અથવા તો અલ્યાસ તરફ તેને અર્દચિજ છે, પરન્તુ ખરી વાત એ છે કે આપણી શિક્ષણ પદ્ધતિ એટલી બધી નિરસ, અશાસ્ક્રીય અને અર્થહીન થઈ પડી છે કે વિદ્યાર્થી તેની સામે કંટાળો બતાવી રહેલ છે. આનો આપણે ઉલ્લેખ અર્થ લઈ એસીએ ઓક ભર્મ છે.

૩ વિદ્યાર્થી ભણવા ચાહે છે પણ આપણે તેની ખરી અજ્ઞાસા સમલ શકતા નથી, આપણે તેની જિજાસાને સંતોષી શકતા નથી, આપણે તેને હોરી શકતા નથી. આપણે આપણી શિક્ષણ—પદ્ધતિમાં ધણોજ હેરફાર કરી નાંખીએ, આપણે તેની જિજાસા શેમાં છે ? તે શોધી કાઢીએ—જિજાસાનું પુરું પ્રતિભિંબ પડે તેવા સાધનો ચોલુએ અને તેની જિજાસાને તૃપ્તિ મળે તેવી પરિસ્થિતિનું નિર્માણ કરીએ, તેને જે વિષયનું જ્ઞાન કૈવાની ભૂખ હોય તેનું જ જ્ઞાન તેને આપીએ, તેના સ્વભાવને પ્રતિકૂળ હોય તુકસાન કરે તેવી લાગતી વસ્તુ શિખવવાની છોડી દઈએ અને વિદ્યાર્થી કયા ક્ષિયમાં આસ ઇચ્છિ ધરાવે છે તે જાણી લઈને તેમાં તેને પ્રવીણ અનાવવામાં આપણે મહદ કરીએ તો વિદ્યાર્થીની સ્થિતિ-શક્તિનો આપણને સાચો અનુભવ મળી શકે ખરે.

૨૫૬

શ્રી આત્માનંદ માટા.

શારીરિક શાક્ષા કરવાથી થતું નુકશાન.

શાક્ષામાં ભય રહેલો છે. આજે આપણી ગ્રનને ભયભીત થયેલી જોઈએ છીએ, તેનું એક કારણ આપણી શાક્ષા પદ્ધતિ છે. શિક્ષા કરવાથી ભયની વૃત્તિને ચોપણું મળે છે, તેનાથી માણુસ ડરપોક ને શુદ્ધામ બને છે. બાળકના ડેમળ મગજ ઉપર શિક્ષાથી ભારે ભયંકર અસર થાય છે. શિક્ષાનો ભય તેની આંખ આગળ નિરંતર ખડો રહેવાથી વિદ્યાર્થીઓ તેજ અને બજા આવી શકતા નથી તેથી તેવી શિક્ષા કરવાનું સહંતર તણ હેવું જોઈએ.

વિદ્યાર્થી વર્ગે લક્ષ્યમાં રાખવા ચોંઘ હિત સુચનાએ.

ધર્મો રક્ષતિ રક્ષિતः—

૧, યતનથી સ્વધર્મનું સારી રીતે રક્ષણુ-પાલન કરવાથી, તે સુરક્ષિત ધર્મ આપણું રક્ષણુ-પાલન કરે છે. એમ સમજું તેની ઉપેક્ષા ન કરવી.

૨, ધર્મના પસારે ઉચ્ચી પહ્ણી (માનવ ભવાદિક હુર્દાં સામચી) ગામ્યા છતાં જે એ ઉપણારી ધર્મની અવગણુના-ઉપેક્ષા કરવામાં આવશે તો ધર્મનો ધ્વજ કરનાર એવા એ સ્વામીદ્રોહાનું શ્રેયસ-કલ્યાણ શી રીતે થઈ શકશે ?

૩, સર્વ ધર્મ કરતાં પ્રધાન ધર્મ સર્વસૌકત કર્યો છે તેને સારી રીતે ઉમજુ શ્રદ્ધા સહિત તેનું સેવન કરનાર અવશ્ય સુખી થઈ શકે છે.

૪, સર્વસૌકત ચિન્તામણી રતન સમાન સુહુર્દાં ધર્મ-રતનની પ્રાસિ જેવા તેવાને થઈ શકતી નથી. પાત્રતાવંતને તેની પ્રાસિ થઈ શકે છે અને પાત્રતાવંત તેની સાર્થકતા કરી શકે છે.

૫, પાત્રતા વગર તેની સાર્થકતા થઈ શકતી નથી.

૬, ગંભીરતા-નિરોગતા-સૌભ્યતા, જનપ્રિયતા, લજ્જા, દયા, શુણરાગ, વિનય, ઝૃતસત્તા, પરોપકાર, વ્યવહાર, કુશળતા વિગેરે ગુણોના અભ્યાસથી તેવી પાત્રતા આવે છે.

૭, સુપાત્રમાં કરેલો યત્ન સર્જણતાને પામે છે.

વિદ્યાર્થીઓમાં કુટેવ દાખલ ન થવા હેવા માટે:—

શાળાના સંચાલકોએ ખાસ કથાન રાખવું ઘટે છે કે નભળી ચાલના વિદ્યાર્થીઓના સંસર્ગ દોષથી બીજા કર્હિક સારા લેખાતા વિદ્યાર્થીઓ પણ ફૂષિત અની ભય છે. સ્વતંત્ર શાળાઓ કે જ્યાં વિદ્યાર્થીઓ ધૂટથી ગમે ત્યાં હરે હરે છે અથવા

વિદ્યાર્�ી વિદ્યાર્થ બાંચન.

૨૫૭

સ્વેચ્છા મુજબ પ્રવૃત્તિઓ કરે છે. ત્યાં નિઃસ્વાર્થ ભિત્રસમા શિક્ષકે યા ગૃહપતિએ પ્રેમ બાવથી જોવાતું કે તેમની પ્રવૃત્તિને પ્રકાર કેવો છે ? તપાસ અવલોકન કરતાં તેમની પ્રવૃત્તિનું સ્વરૂપ અનિષ્ટ જણ્યાયે તો તેને જરૂર રૈકે ને સુધારે. ધ્યાનાભ.

આજનું શુભાશ્રૂષ પરિણામન.

કલેશ યુક્ત વાતાવરણમાં કે હુઃખ પૂર્ણ માનસિક સ્થિતિમાં આધેલ ઐરાક અમૃતરૂપ નહીં થતાં ઝેરરૂપ થાય છે.

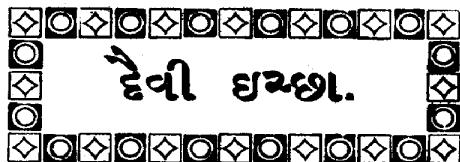
ભય અને ચિન્તામાં આધેલું અજ નકારું જાય છે. કંટાળા ભરેલા અને અનુત્સાહક વાતાવરણમાં લીધેલા ઐરાકની અસર સારી થઈ શકતિ નથી. તેથી લોજન કરતી વખતે મનને સ્થિર-શાન્ત પ્રસ્ત્ર રાખવાની જરૂર છે. કિમતી ઐરાક કરતાં પ્રસ્ત્રચિંતા લીધેલો ઐરાક વધારે પોષક નીવડે છે. આ વાત નાના મોટાં સૌને લાગુ પડી શકે છે.

વિદ્યાર્થીઓ અંગે.

ચાલુ સમયમાં ધ્યેય લાગે વિદ્યાર્થીઓને નિશાળનું જાણુતર અને રમતગમત તથા હરણું ક્રરણું અને મોન્યમજા ખુહ ગમે છે અને તે માટે ખાવા, પીવા, ઉધવાની અને શરીર બગડવા શુદ્ધાંની દરકાર કરતા નથી પરંતુ જ્યારે કસરત કરવા, સેવાનું કામ કરવા, ધરણું કામ કરવા અને ધાર્મિક જાણવા, ધર્મકિયા કરવા અને ધર્મનું કામ કરવા માટે ગમે તેટલું કહેવા સમંજસ્વવા છતાં અથવા કરાવવામાં આવે, અથવા શરમાવવા, હણવવામાં આવે, લાલચે આપવામાં આવે અથવા છેવટે મારવામાં પણ આવે તો પણ તે તેમને ગમતું નથી છતાં કંકાસ કરે છે, તો વેઠ રૂપે એટલે તેમાં તેમને આનંદ પડતો નથી તેથી ઉર્કોએ બને છે, અને શરીર અરાધ થાય છે અને વધારામાં નિર્માર્ય અને નિઃસત્ત્વ થાય છે. તો આનું શું કારણ છે તે તથા તેવાં કામો તેટલા પ્રેમ પૂર્વક હેંશથી ડેવી રીતે કરે તેનો સચોએ સરલ ખુલાસો જે ડોઈ લાઈ ઝેણના જાણવામાં હોય તો તેઓ આજ પત્ર દ્વારા બહાર પાડશે કે નેથી મને તથા અન્યોને જાણવા મળે.

૬૦

મહુદીલાલ ખુસાલચંદ પરીખ—પાલણપુર.



(विहुलालास भू. शाह बी. ए.)

आपणा हृदयमां जे आशापूर्ण तरंगो उला थया करे छे, आपणा आत्मामां जे महत्वकांक्षाचोनो जन्म थया करे छे, आपणां मनमां जे हिंद्य भावनाचोनो उदय थया करे छे ते सर्व शुँ शशक्तिंगनी माझक असत्य अने व्यर्थ छे ? नहि ज. ते सर्व लुवनप्रह छे, सत्य छे, अत्यंत प्रभल छे, प्रकावेत्पाठक छे, आपणी शक्यताचोनी सूचक अने आपणा उद्देशनी उच्यतानी आपक छे. आपणी कार्य करवानी शक्तिना परिमाणुनी दोतक छे.

जे वस्तुनी आपणे चाहना करीचे छीचे अने जेनी सिद्धि भाटे आपणे अंतःकरणपूर्वक अलिलाखाच्या करीचे छीचे तेनी आपणुने अवश्य प्राप्ति थाय छे ज. जे आहर्शी आपणा साचा अंतःकरण्युथी बनाऊयो डोय छे, मन वचन अने कायाने ओळ करीने जे आहर्शीनी सृष्टि करी डोय छे ते जडर आपणी सामे सत्यदृपे प्रकट थाय छे ज.

ज्यारे आपणे कैर्त पहार्थनी अलिलाखा करवा लागीचे छीचे, ज्यारे आपणे मन वचन कायाथी तेनी प्राप्ति अर्थे प्रयत्नवान् अनवाना विचारा करीचे छीचे, त्यारथी ज आपणे ए पहार्थनी साचे आपणे संबंध जोडवानी शडआत करीचे छीचे. तेनी सिद्धिने अर्थे आपणु अंतःकरण जेटलुँ उत्सुक डोय छे आपणी आत्मक भावनाच्या जेटली सुदृढ डोय छे तेटलोज सुदृढ संबंध आपणे तेनी साचे थाय छे. परंतु अद्यसोसनी वात ए छे के आपणे लुवननी स्थूल भाजु उपर विशेष आधार राखीचे छीचे, अने लुवननां आहर्शी तरङ्ग योग्य लक्ष आपता नथी, अने लाईने ज आपणे जेऽप्रेते तेवी सङ्कलता भेणवी शक्ता नथी. पूर्ण विजयथी आपणां अंतःकरणुने गङ्गाइ करी शक्ता नथी, विजयनो डंडे वगाडीने संसारने आश्चर्यसुगंध नथी करी शक्ता. परंतु ज्यारे आपणे मन वचन कायाथी अमुक आहर्शी पर स्थित रहेतां शीघ्रशुँ, जे आपणु ध्येय छे अने जेने आपणे सत्यदृपे प्रकट करवा उच्छीचे छीचे त्यारे आपणे अवश्यमेव सङ्कलता प्राप्त करशुँ. जे आपणे एम उच्छिता डोऱ्याचे के आपणे हुमेशां नवजुवान ज अनी रहीचे, आपणां शर्नीरमां नवयोवननुं ज लेही हुमेशां वहा करे, वृद्धावस्थाथी आपणु शर्नीर लर्णु शीर्णु न थर्छ जाय तो आपणे हुमेशां आपणां मनने योवनना सुखद विचारोना आनंद समृद्धमां भग्न राखवुं जेऽप्रेते. जे आपणे

એમ ઇચ્છતા હોઈએ કે આપણે હુમેશાં સુંદર બની રહીએ, આપણા મુખમંડળ ઉપર સૌન્હર્યનો જ હિંય પ્રકાશ અણકયા કરે તો આપણે આપણા આત્માને હુમેશાં સૌન્હર્યના મીઠા સરેવરમાં સુખ રનાન કરાવવું જોઈએ.

આત્મામાં રમણ કરવાનો—આદર્શપર સ્થિર રહેવાનો એ શું એહા ક્ષયદો છે કે તેનાથી શારીરિક, માનસિક અને નૈતિક અપૂર્ણતાએ નષ્ટ થઈ જય છે. એવી પૂર્ણ સ્થિતિમાં એવું કહિપણ નથી બની શકતું કે આપણે વૃદ્ધાવસ્થા હેઠીએ, કેમકે વૃદ્ધાવસ્થા એ અપૂર્ણતાનું જ પરિણામ છે, અને આદર્શથી એ અતાઓ હજારો ગાડિ હુર રહે છે.

આદર્શમાં—મનોરથસુધિમાં હેઠા પદાર્થ સુંદર રહે છે. ક્ષય અને કુરૂપતાને માટે ત્યાં સ્થાન નથી. આદર્શપર સ્થિર રહેવાની ટેવથી આપણને મોટી સહાયતા મળે છે, કેમકે એ આપણી સમક્ષ પૂર્ણતાનો સાક્ષાત્ નમુનો રાખે છે. એ પવિત્રતા અને પૂર્ણતા તરફ આપણો વિશ્વાસ વધારે છે, આપણી શક્તાને દેખ બનાવે છે, કેમકે આપણે આપણી મનોરથસુધિમાં સત્યના આભાસને જોતા રહીએ છીએ અને તે વિષયમાં આપણને એવું લાન રદ્દી કરે છે કે એ સત્ય ડોાઈ દિવસ આપણને અવશ્ય પ્રાપ્ત થવાનું જ.

જે પુરુષની જેવા થવાની તમે ઇચ્છા રાખતા હો તેનો આદર્શ હુમેશાં તમારી સમક્ષ રાખો, તમારો આદર્શ એવો બનાવી લ્યો કે તમારામાં પૂર્ણતા અને કાર્યશક્તિ ઘણી વિલક્ષણતાથી બદેલી છે. તમારા મનમાંથી રોગ વિગેરે ન્યૂનતા-ઓના વિચારેને હાંડી કરો. કહિ પણ તમારા મનના દ્વારામાં નિર્ભાસતા, ન્યૂનતા અને અવિજ્ઞયના વિચારેને પ્રવેશ ન કરવા હો. હુમેશાં એ આદર્શ કરવાનો મન વચ્ચે કાયાથી પ્રયત્ન કરો, જરૂર તમને એ પ્રયત્ન સંક્રિતતા પ્રાપ્ત કરવામાં સહાયતા કરશે.

નુચો ! આશાજનક વિચારેમાં ડેટલી અધી વિલક્ષણ શક્તિ બદેલી છે ? જ્હાલા વાચકો ! જરા એનો અનુભવ તો કરો. તમે એ વિચાર મજબૂત કરી લ્યો કે મારી અભિલાષાએ પૂર્ણ થશે, મારા મનોરથ સિદ્ધ થશે, મારા સુખસ્વર્ણ સાચાં પડશે, મને વિજય અને સંક્રિતતા પ્રાપ્ત થશે. અવિજ્ઞય અને અસંક્રિતતા અમારી પાસે પણ નહિ આવે, મારે માટે જે કાંઈ થશે તે સાઝું જ થશે, ખરાબ કહિ પણ નહિ થાય અને પણી નુચો કે એ જાતના હિંય અને આશામય વિચારેનો. તમારી શારીરિક, માનસિક, આધ્યાત્મિક તથા સાંચારિક ઉત્તતિ પર ડેટલો અધી હિંય પ્રભાવ પડે છે. હું તો ધ્યાતરીપૂર્વક કહું છું કે એ વિચારેને ટેવના રૂપમાં પરિણત કરવાથી મનુષ્યની જેટલી ઉત્તતિ થાય છે, તેટલી કોઈ બીજી વસ્તુથી થતી નથી.

તમે તમારાં અંત; કરણમાં જેટલો વિશ્વાસ જમાવી હો કે જે હાર્ય માટે આ

૨૫૦

શ્રી આત્માનંદ પ્રકાશ.

સંસારમાં માર્ગ આવવું થયું છે તે કાર્ય હું અવસ્થય પુરું કરીશ જ. એ વિષયમાં તમારાં અંતઃકરણમાં લેશ પણ સંહેદ્ધને સ્થાન ન આપો. કદાચ એવો સંશ્યાતમારા ભનના દ્વારાઓ માં પ્રવેશ કરવા માંગે તોપણું એને બહાર હાંડી કાઢો. હમેશાં જે વિચારો હિતકર હોય તેને જ તમારા ભનોમંહિરમાં આવવા હો-તે પદાર્થને આદર્શ બનાવો કે જેની સિદ્ધિ તમે ચાહુતા હો-તમને જે વિચારો અહિતકર લાગે તે વિચારોને તમારાં અંતઃકરણમાંથી બહાર કાઢો, જે ભાવો તમને નિરાશાના સમુદ્રમાં ડુખાડે તે બધાને હેશનિકાલ કરો. ટુંકામાં જે જે પદાર્થ અસ્ક્રલતા અને હુંઘની સ્થૂયના કરે છે તે પદાર્થ માત્રને તમારી પાસે કહિ પણ ન આવવા હો.

તમે ગમે તે કામ કરો, ગમે તેવા થવા હુંચછતા હો, પરંતુ તે અધારા સંખયમાં આશાપૂર્વ શુલ્ષ ભાવનાઓન્ન રાપો. એમ કરવાથી તમને તમારી કાર્ય શક્તિ વધતી જતી જણુંશે અને સાથેસાથે એ પણ જણુંશે કે તમે પોતે સુધરતા જાઓ છો. એક વખત તમારા ભનોમંહિરમાં આનંદી, સૌભાગ્યશાલી અને શુલ્ષ ચિત્રો જોવાની તમને ટેવ પણ જણો તો પણ જેના વિરદ્ધ પરિષ્ઠામવાળી ટેવ પાડવાનું કામ તમને સુશક્લી ભારેલું લાગશે. જે આપણાં બાળકો ઉકા પ્રકારની ટેવો પાડવા માંડે તો નિશ્ચયપૂર્વક કહી શકાય કે આપણી સંજ્ઞયતામાં મહા વિલાષણ પરિવર્તન થઈ જય અને આપણા જીવનની મહત્વામાં અપૂર્વ વૃદ્ધિ થઈ જય. આપણે આપણાં મનને એ રીતે સંસ્કૃત બનાવશું એટલે પણ આપણામાં એક એવી શક્તિ આવશે કે જે વડે આપણે આપણી શાંતિ, સુખ અને સંક્રલતાને લુંટી જનાર શરૂઆત પર સંપૂર્ણ વિજય પ્રાપ્ત કરી શકશું.

જું તમે સંસાર વ્યવહારમાં પ્રવેશ કરવા માટે પૈસાની છંચણ કરો છો? હું કહું હું કે તમે સંસારમાં પ્રવેશ કર્યા પહેલાં મન વચન કાયાથી એટલું વિચારી લોા કે માર્ગ ભવિષ્ય પ્રકાશમાન થશો; હું ઉત્તીતિશાળી અને સુખી થઈશા, મને સંક્રલતા અને વિજય પ્રાપ્ત થશો વિગેરે સર્વ પ્રકારની આનંદદ્વારાક સામન્દ્રી મને પ્રાપ્ત થશો અસ, સૌથી પહેલાં એ હિત્ય વિચારોઝી પુંલ વિનને સંસારપ્રવેશ કરો અને પણ જેનાં મીઠાં ક્રણ ચાપો.

અનેક મનુષ્યો, પોતાની છંચણાઓને, પોતાના આશામય તરંગોને જાનવિદ્યમાન રાખવાને બહલે તેને નથળાં બનાવી હે છે. તેઓ એટલું નથી જાણુતા કે આપણી અભિલાષાઓની સિદ્ધિને અર્થે આપણે જેટલો દફબાવ, અવિશ્વલ નિશ્ચય રાખશું તેટલી જ આપણે તેની સિદ્ધિ કરી શકશું. તેઓ એ વાત નથી જાણુતા કે આપણી આશાઓને જીવતી જગતી રાખવાના પ્રયત્નો કરતા રહેવાથી જ આપણે તેને પ્રત્યક્ષ કરવાનું બલ પ્રાપ્ત કરી શકશું.

ડોએ પણ વસ્તુ એવી નથી કે તેની સિદ્ધિનો સમય બહુ હર લાગતો હોય. તે આપણને અસંગત લાગતી હોય તથા એનો માર્ગ આપણને અંધકારમય લાગતો

देवी धर्मालय

२५४

होय, परंतु जे आपणे मन वयन कायाची तेने प्रत्यक्ष करवा माटे प्रयत्न करीचे तो धीमे धीमे आपणे जडर तेनीढीसिद्धि करी शकीशु. अहिं आगण एक वात खास लारपूर्वक जखुपवानी जडर छे के आपणे उवण अभिलाखाच्यो ज करता रहेशु अने तेनी सिद्धि माटे कांध पण प्रयत्न अथवा परिश्रम नहिं करीचे तो जलतरंगनी भास्कर तेतु उत्थान अने पतन मनमां ने मनमां ज थेच.

अभिलाखा त्यारे ज इलहाची बने छे के ज्यारे तेने ६६ निश्चयमां परिण्युत करवामां आवे छे. अभिलाखानुं ६६ निश्चयमां भिलन थवाची उत्पादक शक्तिनो प्राहुलीव थाय छे. इलनी प्राप्ति त्यारे ज थाय छे के ज्यारे अभिलाखा अने ६६ निश्चय अने लोगां मणीने काम करे छे.

आपणे हमेशां आपणा विचारो, मनोभावो अने आदर्शना गुण प्रकृति अनुसार आपणी कर्येत्पादक शक्तिमां वधारा घटाडा करीचे छीचे. जे आपणे हमेशां पूर्णुतानो आदर्श आपणी समक्ष राखीचे, जे आपणे हमेशां एटलुं समजता रहीचे के आपणे सर्व शक्तिमान परमात्माना अंशदृपडेवाची आपणे पूर्णुं छीचे तो आपणुने ए स्वास्थ्यकर शक्ति प्राप्त थेचे के जे आपणी दोग संबंधी भावनाच्योने एकहम शक्तिं बनावी देशे.

धर्म भनुण्यो एम कडा करे छे के भाई, हवे तो अमे थांडी गया, काम करवाने नालायक थई गया, हवे तो अमने परमात्मा संभाणी ले तो साढ़. तेच्यो एवा रोद्धुं रोवे छे के अमे धर्मा कमनसीध छीचे, अमारूं नसीध कुटी गयुं छे, हैव अभारी विद्धु छे, अमे दीन छीचे, गरीध छीचे, अमे तनतोड महेनत करी, उन्नत थवा इच्छयुं पण भाग्ये अमने जरापणु महद न करी. परंतु ते विचारो एटलुं नथी जाणुता डोता के ए जातना अंधकारमध्य, निराशाजनक विचारो करवाची, एवी जातनां रोद्धुं रोवाची आपणे आपणा हाये ज आपणा भाग्यने हैडीचे छीचे अने उन्नतिरूपी डौसुहीने डाणां वाढणांमां ढांकी दृष्टी छीचे. तेच्यो एम नथी समजता के ए जातना कुविचारो आपणी शांति, सुख अने विजयना कडा शत्रु छे. तेच्यो ए वात भूक्ती जय छे के ए जातना विचारोने मनमांथी देश निकाल करवा एज मंगणे छे. आथी तो तेच्यो पोताने हाथी ज पोताना पग पर कुठाराघात करे छे. एक क्षणवार पण आपणे एवा विचारोने मनमां स्थान न आपवुं के आपणे मांडा छीचे-नवणा छीचे. केम्हे एवा विचारोथी दोगने शिरपर आकमणु करवामां महद मणे छे. आपणे सधणा आपणा विचारना ज कृणदृप छीचे. उच्यता, महानता, पवित्रताना विचारोथी आपणामां आत्मश्रद्धा उत्पन्न थाय छे, उच्चे लह जनारी शक्ति मणे छे अने उच्चा हरक्षतुं साहस प्राप्त थाय छे. —यालु

ખરી બેટ.

તમારા શત્રુને આપવા લાયક ઉમદા બેટ ક્ષમાછે. તમારા વિરોધીને આપવા લાયક પરમ બેટ સહિષ્ણુતા છે; તમારા મિત્રને આપવા લાયક બેટ તમારું હૃદય છે. તમારા ભાગાકને આપવા લાયક બેટ સારું દૃષ્ટાંતરૂપ જીવન છે. પિતાને આપવા લાયક બેટ તેમનું સન્માન છે. તમારી માતાને આપવા લાયક બેટ તમારું સારું ચારિત્ર છે, કે જેને લઈને છે તમારે વિષે ગર્વ લઈ શકે. તમોને પોતાને આપવા લાયક બેટ સ્વમાન છે. સર્વ મનુષ્યને આપવા લાયક બેટ ઉદારતા છે. કંઈ વસ્તુની મનુષ્ય ધીજને બેટ આપે છે તે એન મહત્વતું છે, પણ તેવા ડેવા-હૃદય ભાવથી આપે છે તેજ મહત્વતું છે. આપણી હરેક બેટ પાછળા આપણું હૃદય હોલું જેધું.

વિશ્વપ્રકાસ ત્રીજું વર્ષ અંક ૧ લો. ૫૦. ૨૫.

વર્તમાન સમાચાર.

શ્રી પાલીતાણું શ્રી યશોવિજયજી નેત શુદ્ધકુળમાં “શેડ કેશરીચંદ ભાજુભાઈ વિદ્યાર્થીબન” ખુલ્લું મુકવાનો લખ્ય મેળાવડો—

આ સંસ્થામાં નવા બંધાયેલા મકાનો પૈકી ઉપરોક્ત મકાન પાલીતાણુના નામદાર ડાકો઱ સાહેબના હાથ્યી ખુલ્લું મુકવાનો લખ્ય મેળાવડો તા. ૧૩-૫-૧૯૨૫ વૈશાઢ શુદ્ધ ૫ સોમવારના રોજ સાંજના છ વાગે કરવામાં આજો હતો. શુદ્ધકુળને ખ્વજા, પતાકા વગેરેથી શાચુગારવામાં આખું હતું. પાલીતાણુના નામદાર ડાકો઱ સાહેબ ઉપરાત જોડબના પ્રીન્સ, ધરમપુરના પ્રીન્સ, દીવાન સાહેબ, નારખદાસભાઈ ગામી સાહેબ, શેડ માણેદ્વાલાભાઈ મનસુખભાઈ, શેડ હીરાલાલ અમૃતલાલ, પાલીતાણુના નગરશેડ વનમાળીદાસ તથા આ સંસ્થાની મુંબંધ, ભાવનગર તથા પાલીતાણુની કભીનિના સભ્યો, યાચાળું, પાલીતાણુના શહેરીઓ વગેરે હાજર હતા. પ્રથમ મંગલાચરણ થયા બાદ, આમ ત્રણુપત્રિકાનું વાચન, સ્વાગતનું ગીત ગાયા બાદ એ સંસ્થાના જનરલ કભીનિના પ્રમુખ શેડ જીવણુંદ ધરમચંદ ડાકેરીએ સ્થાપનાથી આજસુધીનો દુંક રીપોર્ટ રજુ કર્યો હતો. ત્યારખાદ ગાંધી વક્ષબદાસ ત્રિલુનનદાસે શેડ કેશરીચંદ ભાજુભાઈનો દુંક પરિચય બતાવતાં નામદાર ડાકો઱ સાહેબને વિદ્યાર્થી લુંન ખુલ્લું મુકવા અને શેડશીનો હાટો ખુલ્લો મુકવા વિનાંતિ કરી હતી. મકાન ખુલ્લું મુકવાની હિયા થઈ રવા બાદ વિદ્યાર્થીઓ કસરતના પ્રયોગો કરી બતાવ્યા હતા. ત્યારખાદ શેડ લલ્લુભાઈ કરમચંદ દ્વારા લો ભાવનગર કભીનિના આ સંસ્થા પ્રત્યે જાતિ સેવાની પ્રથમસા કરતાં, શેડ શુદ્ધકુળચંદ આખુંદજી કે ને સ્થાનિક કભીનિના પ્રમુખ છે તેમનો પરિચય કરાવતાં શેડ શુદ્ધકુળચંદ આખુંદજી તરફથી વિદ્યાર્થીઓને બેટ આપવા તૈયાર કરાવેલ રૂપાના મેડલો તથા સંસ્થા તરફથી ખાર્ભિક પુર્તોડા વિદ્યાર્થીઓને એનાયત કરવા નામદાર ડાકો઱ સાહેબને વિનાંતિ કરી હતી. તે એનાયત થયા બાદ નામદાર ડાકો઱ સાહેબે સમયોગિત આપણું કર્યું હતું. ત્યારખાદ શેડ શુદ્ધકુળચંદ આખુંદજીએ નામદાર સાહેબ, મહે-

वर्तमान सभाचार अने अंथस्वीकार.

२६३

मानो अने आवेद गुहरयोने। उपकार मानवानी हरभास्त इती हती तेने शेष हकीकत्यां डेखती-
यहे टेका आपतां कृषकारथी सत्कार करतां भेलावडे विसर्जन थयो होता।

श्री नवपदल महाराजनु ग्यारावन—श्री नवपदल ग्यारावक सभाजे आ
वज्ञते गया मासमां श्री शत्रुंजय महातीर्थ दरवर्धनी जेम विशेषमां यात्राना लाल साथे आरा-
धन कर्तुं छे, अनेक लाई घडेनोने कराव्युं छे। परमात्मानी लक्ष्मि पञ्च आत्मादपूर्वक इती छे।
तेना कार्यवाहकोने आ मांगलिक कार्य प्रत्ये धन्यवाद आपीये छीये। अमो तेनी अंतःकरण
पूर्वक अतुमोदना इराये छीये।

मुंख्यमां श्री लैन युवक संघ नामनी संस्थानी स्थापना—शहेर मुंबधमां
ता. ३-५-२८ ना रोज रा. रा. कुलभाई लुट्टरास वडीलना प्रमुखपण्या नीचे नवयुवानोनी
एक सभा भला हती. रा. प्रमुखश्रीये उपरोक्त नामनी संस्था स्थापवानी योताना भाषणमां
जडीयात यतावी समय धर्मनी जडीयातो जण्यानी हती. छेवटे “श्री लैन युवक संघ”
नामनी संस्थातुं स्थापन करतां तेना उद्देशे नकी करवामां आया हता. त्यार आद वंधारण
अने नियमो नकी करवामां एक इमारी निमवामां आवी हती. भीज भीटीये आ संस्थाना
कापीया परमाणुदास कुंवरण, शाह नगीनदास जगछवनदास तथा शाह ओववल धनजुलाई
सोलीसीटर ये त्रिष्णु अंधुओनी सेकेटरीये तरीके निमेनाक करवामां आवी हती. आ संस्था
योताना उद्देश प्रभाषे कार्यमां आगण वधे तेम तेनी आयाद छच्छीये छीये।

नीयेना अंथो तथा शीपोर्ट लेट भज्या छे ते साभार स्वीकारवामां आवे छे।

१. चंदनगाला-इलाचीकुमार-जंयुस्वामी-अमरकुमार-श्रीपालमहाराज-
कुमारपाणी-पैथडकुमार-विभगशाह-वस्तुपाणी तेजपाणी, ऐमो देवराष्ट्री, जगडुशा-
प्राणु ग्यापनार भहात्मायें—लेखक धीरजलाल टोकरशी शाह याल अंथावणी नंबर
८ थी २१ बाण साहित्यनी सभूद्धिमां लेखक उमेरो कर्त्ता छे। किंभत सवा आनो दरेको।
मणवातुं स्थग बाण अंथावणी कार्यक्रम आनपुर अभद्रवाद।

आर्यकुमारिका—वर्तमान स्तीलुवनः—लेखक अने प्रकाशक आवलु हामलु शाह
धर्मिक शिक्षक याणु पी. पी. लैन हाई स्कुल मुंबध-कुमारिकानु गैरव, आर्यकुमारिका डोने
क्लेपाय ते अ्याल ग्रथम अंथमां आपवामां आवेद छे। शीलवनना विकट प्रश्नो कुमा छे ? ते
केम जलही दुर थध श्वेत, अवन केम सुभमय बनी श्वेत तेना केटलाक अंशो भीज शुकमां आपेक
छे। किंभत ये आना दरेको।

जैनस्तोत्र सम्बन्धः—अनेक पूर्वार्य विरचित अने अत्यादसुवीमां ग्रसिक नहिं थयेक
प्राचीन स्तुति अने स्तोत्रने (संस्कृत, मागधी भाषामां आपेक) संग्रह छे। तेना अन्यासी
माटे अपूर्व वस्तु छे। दक्षिण विलारी श्री अमरविजयल महाराजना शिष्य यतुरविजयल
महाराज तेना संग्राहक-संपादक छे। दक्षिण विलारी मुनिराजश्री राजविजयल महाराजना
आदेशथी श्री निर्णयसामर प्रेस तरक्की प्रगट थयेक छे। किंभत देढ इत्येति।

२६४

श्री आरम्भानंद प्रकाशः

श्री विविध पूजा संअहु—न्यायांलोनिधि श्रीगृह विजयानंदस्त्रि, मुनिराजजी
हुंसविजयल महाराज अने आचार्य श्रीभृष्ट विजयवद्विक्षेप्तुरि महाराज दृत सुंदर साग
रागिणीयी अनेली शाळा सुंदर भोटा टाइप सारा कागण सुंदर व्याधीगीयी तैयार थयेख
आ युक्त श्री हुंसविजयल नैन श्री व्याधीगीरा अमदावाद तरहयी हालमां अगट थयेख छे. तेनी
उपर्योगीता अने लोडर्सी डेटली छे ते तेनी आ अगीपारमी आष्टुति अगट थयेल उपरथी
जथाय छे. किंभतः३. १-१०-० भगवानुं स्थग लुध्यसावाडा—अमदावाद.

श्रीभृष्टावीर ल्यन रेखा—लेखक मुनिश्री हुंसविजयल. प्रकाशकः—श्री लैन सस्तुं
साहित्य प्रचारक कार्यालय क्लोल. किंभत नसु आना. श्री वीर प्रखुना नपसारना अवथी
लध श्री भृष्टावीर प्रखुना अव सुधीतुं टुंकमां चरित्र आ युक्तमां अगेझयुं छे. साथे गौतम
शुद्धनी संझेप हुंकीक्त अने वीर प्रखु, गोशालो अने शाक्यपुत्रनुं अंतर अताववामां आयुं
छे. प्रयत्न सारो कर्त्ता छे.

स्नान पूजा कणशाहि संअहु—प्रगट कर्ता मास्तर पोपटलाल साकरचंद भावन-
गर. अष्टप्रकारी, श्री नवपद्म, श्री सतरबेही पूजा अने तेनी विधियो, आरतीयो, स्नान
पूजनमा तथा विधि, कणश, अने तेनी विधि, अष्टोतरी स्नान, शांति स्नान, गृहशांति, नव-
स्मरण, संस्कृत चैत्यवंहन, स्तवनो स्तुतियो, दुंब स्थापन वगेरेनो संअह आ युक्तमां आपेल
छे. किंभत श. १-४-०

आत्मथोथ—प्रसिद्ध कर्ता वाडीलाल कुकुलाई सारंगपुर तणीवानी पोण—अमदावाद
किंभत सहृपथोग. खार भावनातुं दुंक स्वरूपतथा चोडीक सनजायेनो संअह आपवामां आवेल छे.

तदेषु लैनः—पत्रिका अथम तथा यीज्ञ प्रकाशक श्री विजयवर्मी प्रकाशक सक्ता
पत्रिका कमीटी भावनगर-धीमे पगले आगण वधती आ संस्थानो ते भाँडेना सब्येनो. लैन
समाजनी आधुनिक स्थिति भाटे पोताना विचार प्रकट करवानो. आ एक नवो प्रयत्न छे.
पत्रिका, मासिक के पेपरनो जन्म आपवो ते सहेल छे, परंतु तेने निष्पक्षपातपषु चलाववुं के
टडानी राख्युं ते मुक्तेलीभयुं कार्य छे. प्रकाशक तेनो घ्याल राखी पोतानुं आ कार्य आगण
यसावे अने तेनी लयिष्यमां आआहि याय तेम धृष्टियो छीज्ये.

१ रीपेटोः—श्री सिद्धक्षेत्र श्री वर्द्धमान तप, अंथेल खातानो त्रीने रीपेट
अने हिसाब. प्रकाशकः—शाह लालचंद लीलाधर. आतुं आतुं दरेक शहेर या गाममां ज़री-
यातवाणुं छे. आ भातानी वजनदार गृहस्थानी दूस्ती अने सक्षयतरीक निमोनोक थयेली छेतेथो
ते विश्वासपानज गणी शकाय. हिसाब चोपवटवालो छे. हालना मुख्य कार्य करनार वृक्ष
थयेल होवायी तेमषे के द्रस्तीयो के कमीटीये भीज सेवाभावी अधुनी तैयार थवा साथे भाँडे-
तयार थवा निमोनोक करवा ज़र छे. मद्द करवा लापक आतुं छे. अविष्यमां तेनी आधार
धृष्टियो छीज्ये.



સુંદર ઝોટાઓ (છણીયો).

કુલકત્તાવાળા નથમલ ચાંડલીયા ઝોટાઓએ હાલમાં વિવિધ રંગોથી તેથાર કરાવેલ સુંદર ઝોટા મનોહર અને આકર્ષક બણાર પાડ્યા છે, કે જે જોતાંજ ખરેખર ભક્તિરસ ઉલ્લાસ ગયા સિવાય રહેતો નથી.

નામ.	સાઈઝ.	કીમત.	નામ.	સાઈઝ.	કીમત.
શ્રી કુસરિયાજી મહારાજ	૧૫x૨૦	૦-૮-૦	પદ્મેસ્યા સમજણું સહિત	૧૫x૨૦	૦-૬-૦
શ્રી બંદગુમના સોણરવમા સાર્થ	૦-૮-૦		શ્રી જીનાસ્તસુરિજી (દાદાસાં)	૦-૬-૦	
મધુભિંદુ દણ્ઠાંત સમજણું સહિત	૦-૬-૦		શ્રી પાવાપુરીનું જલમંહિર	૧૬x૧૨	૦-૪-૦
૧ શ્રી મહાવીરસ્વામી			સમજણું સહિત.		
૨ શ્રી ગૌતમસ્વામી મહારાજ			૧૫x૨૦ પુનાવાળાના પ્રકટ થયેલ		૦-૮-૦
૨ શ્રી ગૌતમસ્વામી મહારાજ					૦-૧૦-૦
સર્વેત શિખરતીર્થ ચિત્રાવલી રૂ ૨-૮-૦			શ્રી જૈન આત્માનંદ સભા—બાવનગર.		

તદ્દન ઘટાડેલા લાલ.

		કીમત સો નકલના.
૧ નવરમરણું-સ્તોત્રો છદો સાથે...
૨ મહાસતી બંદનાળા	...	૦-૩-૦ ૧૨-૮-૦
૩ પ્રસન્નચંદ્ર રાજર્હિ	...	૦-૨-૦ ૬-૦-૦
૪ ગજસુકુમાર ચરિત્ર	...	૦-૨-૦ ૬-૦-૦
૫ કથવળા શેઠનું ચરિત્ર	...	૦-૨-૦ ૬-૦-૦
૬ સ્નાત્ર પૂજા તથા અષ્ટપ્રકારી પૂજાના દોઢા	...	૦-૧-૦ ૫-૦-૦
૭ આવક્ષના બારવતની રીપ	...	૦-૧-૦ ૫-૦-૦
૮ સમાધિ વિચાર	...	૦-૨-૦ ૬-૦-૦
૯ શ્રી અક્ષયાનંદ તપની વિધિ	...	૦-૧-૦ ૫-૦-૦
૧૦ પાંચ પદ્ધની અનુપૂર્વી	...	૦-૧-૦ ૫-૦-૦
૧૧ પુષ્ટ્ય પ્રદાશનું સ્તવન	...	૦-૦-૮ ૩-૦-૦
૧૨ રત્નાકર પદ્ધયીલી તથા શ્રી નેમનાયના સલેક્ટો	...	૦-૦-૮ ૩-૦-૦
૧૩ શ્રી ગૌતમ સ્વામીનો રાસ તથા શ્રી ભક્તામર, કલાણુમંહિર સ્તોત્ર	...	૦-૧-૦ ૫-૦-૦
૧૪ શ્રી આત્મભીરની કથાઓ	...	૦-૪-૦ ૨૦-૦-૦
૧૫ કંચ ગિરનારની યાત્રાનો રાસ...	...	૦-૧-૦ ૫-૦-૦
૧૬ શ્રી સિદ્ધાચળ સ્તવનાવળી	...	૦-૨-૦ ૧૭-૦-૦
૧૭ શ્રી શાનુંનય મહાત્મિયોહિ પાંચે તિર્યના કદ્દો અર્થ સાથે	...	૦-૧-૬ ૬-૦-૦

સતર જાતની નસુનાની નકલ માટે પોસ્ટ બર્ચ સાથે રૂ. ૧-૧૨-૦ મોટલી ખાતી કરો. ડાઇપણું પુરુષની સો નકલથી ઓછી મોકલાશો નક્કી.

જૈન સર્વતી વાંચનમાળા.

રાધનપુરી બાજાર—બાવનગર.

આપણો જીવાન

‘આપણો જુવાન—કે જે જીવન શરીર કરતો ક્રાઇટ પણ મનુષ્ય ડેટલો સ્વમહિરી હોય છે ? એ સ્વમને સિક્ક કરવા માટે જે મહેનત, જે વ્યવસ્થા શક્તિ અને જે સંયમ નોભયે તેને અભાવે માત્ર ચાર પાંચ વર્ષમાં એને જીવનનો ચાક ચડી જાય છે. ડ્રાલેજના દ્વારા માંથી કેટલા કેટલા સ્વમરસ્થ જુવાનો બધાર પડે છે ? અને એક દ્વારાના ગાળા પઢી તેમનું સમેલન ભરાય ત્યારે નિર્દિષ્ટાદી વ્યવહારકુશળ પુરુષો તરીકે તેમને નોધને જગ્યારમાં જગ્યાર આશાવાદી પણ ગયારી પડે ! જીવનનો આટલો ખંધો ચાક, સ્વમાં વધારી પઢી એને પાર ન પાડવાની નિસ્તેજ અપોઝેય વૃત્તિ અને છુવેટ એકદી નક્કર વ્યવહારકુશળતા ક્રમાંથી આવે છે એ જીવનના રસમાનને કેમ શેષી કે છે એ રહસ્ય જાણવા નેવું છે. ગુજરાતી જવિષ્યને ઓણખી શક્તો જ નથી; એ વર્ત્ત માનનો જ જીવડો છે. એનું ધર, રાખરચીલાં, ધરેણ્યાં ને વાસણું માંડયી ભરપૂર હોય છે. એનામાં ધરેખરા વણિકયુદ્ધ છે. એ પોતાની દીગલીને શણુંગારવામાં કેટલો ઉત્સાહી છે તેટલો જ આગળ વધતી દુનિયા વિષે બેરીકર છે. એની મોટામાં મોટી મહિલાકાંક્ષા કીછાને માટે પેસો સુકી જવાની હોય છે. એનું વધારેમાં વધારે શોર્ય સભા ભરવા પૂરતું; એનું સાહમ ઈંગ્લાંડ અમેરારકાની ક્રાઇટ એજ સી રાખવા જેટલું; એની મૈની જ્યાંસુધી એના સ્વાર્થને ધક્કો ન પહોંચે ત્યાંસુધી; એનો રણ્ણનાં છડતાલ ન પડે ત્યાંસુધી; એના જીવનનો મોટામાં મોટો લ્લાંબો શેષાણું ને મોંધા મુલનો સાહલો પહેરાવવાનો; એનો સંપૂર્ણ જ્યાંસુધી વિશ્વામિત્ર, વસિષ્ઠ, ગૌતમ અને શ્રીહેમચંદ્રને ક્રાઇટ ન બોલાવે ત્યાંસુધી; એનું સાહિલ્ય ઉંડા જેટલું; એની કલા લીધાનની રી-ગર્ભને છથીમાં મદદને એની; એનો ધર્મ કીડીયાર્ડ પુરવાનો; એનું ધ્યેય મદદજનમાં મહાલવાનું. આવા વાતાવરણમાં ઉછરેલો ગુજરાતી જે કાંઈ બોધાવણૂં આદર્શો પોપણી ચેડે પઢી લાગ્યો હોય તે વેર પડેંચે ન પડેંચે તે પડેંચાં તપેદાં લોડા પરથી પાણીનો છાડો છુમંતર થઈ જાય તેમ છુમંતર થઈ જાય છે. પરિષ્યાને ગુજરાતી જમે તે ક્ષેત્રમાં ન ગમે તે કામ કરતો હોય, પણ તેના વિષે આટલો સુદાલેખ તો લખી જ રાખવો; એ ક્રાઇટ પણ દિવસ ગુજરાતી મરી શક્તો જ નથી; વ્યવહારકુશળતા—નક્કર વ્યવહાર-કુશળતા એને છાડી શકે નહિ. દેશદેશના જુવાનો જાગ્યા છે એ વાત તહુન સાચી છે. દેશદેશના જુવાનોમાં ત્યાગ અને સંયમ જગ્યા ઉદ્ઘાટા છે, ઉત્તમાં ઉત્ત્ર આત્મપરીક્ષા અને વ્યવસ્થાશક્તિ હેખાય છે; પણ ગુજરાતનો જુવાન જાગ્યો છે એ વાત તહુન એટી છે. અંગણી જુવાન જગ્યા શક એ સંભાવિત છે, ગુજરાતનો જુવાન પણ જગ્યા શક એ હોય પઢી સંભાવિત થઈ શક તેમ છે, પણ અત્યારે એ જગે છે એ તહુન ગંગ્ય છે. એ જગતો નથી. એ ઉંભોટો પણ નથી. આહિ ક્રાઇટ જુવાન જ નથી, પઢી જંગણ ઉંભાણી વાત જ કણ્ણા રહી ? આહિ ગુજરાતમાં તો છે છ આદ દિવસનો વિવેકધીન જલસો ભજવાને આસા વણુંસો આવન દિવસ સુધુ જવાના. કાર્ય, ધ્યેય, સંયમ ને વ્યવસ્થા એ ચાર શરૂદોણી વાત ન કરવો.

શ્રી ધૂમકેત.